

Expt. No. 1

Name - Mayank Dha

Roll No. - 20-1-43 - 014813

Excm Roll No. - 20345308404

Paper code - 02051121

प्रश्न

अ. 3 संत कबीरदास आकितकालीन काल की निर्गुण
 दास के जानाकारी करते हैं। इनका मानना है।
 की मनुष्य को अपने जीवन में पाखंड एवं
 साहचर्य के साथ ही जीवन व्यतीत करना चाहिए।
 उसे समस्त रहस्य ही चेत जाना चाहिए। सांसारिका
 वासनाएँ आरंभ में तो सुख प्रदान करती
 हैं किन्तु आगे बिना बान के बाद काँटे ही दाख
 लगाने हैं। अम की यह विशिष्टि वंशी
 ही है जैसे बबूब का बीज बान के बाद
 ही दाख लगाने हैं, आम की मिठास गही
 सिबनी।

Teacher's Signature : _____

संत कबीरदास को सांसारिक मनुष्य की समझ पर तरस आ रहा है। क्योंकि यह मनुष्य परम्पराओं के चक्के में फँसकर अपना मनुष्यत्व समझ नष्ट कर रहा है। उसने आश्रय तो विषयवासनाओं का लिया है और दूधधारा है भवसागर से पार उतरने की। उसे इनकी ही सुक्ति ज्ञान नहीं कि यदि भवसागर से मुक्ति चाहिए तो सांसारिक प्रमाणों से दूर रहकर राम-नाम में अपने जीवन व्यतीत करें। कबीर का मानना है कि मनुष्य अपने मुख से जो भी वचन निकाले, उसके कर्म भी वचनानुसार हों। यदि वे ऐसा नहीं करते

तो उनकी स्थिति कुत्तों के समान होती है। जिन्हे काल द्वारा बाँधकर शमपूर ले जाते हैं। इन मनुष्यों को अपने वचन के अनुसार कर्म भी करने चाहिये।

श्रीत कबीरदास का मानना है कि मनुष्य मन ही वचन से एवं कर्म से भिन्न होना है। अर्थात् मन में कुछ और होना है किन्तु वचन कुछ और। कर्म की स्थिति दोनों से भिन्न है। भाव यह है कि केवल कर्म पदों का ज्ञान ही उस परम नन्व का जानना भी आवश्यक है वरन् कि शही उस नन्व का लही जानना ही ज्ञान में जन्म - मरण का फंदा पड़े जाना है।

कवि की दृष्टि में यदि मन में राम-
-देव की कंची खीटें तो माला फेंकना बकार
है। अशीत जब तक हृदय में सच्ची भावित
नहीं जागती मतबतक मनुष्य भाषा के
वशीभूत रहता है और इस संसार में
रहकर शांति आगता रहता है।

जो व्यक्ति जानबूझकर सत्य का साथ छोड़
देता है और सांसारिक सुख के चक्र में
फँसकर असत्य को जीवन में स्थान
दे देता है। इससे ऐसे व्यक्ति की संतुष्टि
कभी स्वप्न में भी प्रदान न करे। भाषा
छोड़कर असत्य को नहीं अपनाया
चाहिए।